मजलिस 8

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अलहमदो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन अर्रहमानिर्रहीम मालिके यौमिददीन। (सलवात)

मौजूदा तरतीब के लेहाज़ से कुरआने मजीद का पहला सूरा, सूरए हम्द। ये मौजूदा तरतीब मैं क्यूँ कह देता हूँ? ये इस बिना पर मौजूदा तरतीब कह देता हूँ कि हमारे नज़दीक कुरआन के अलफ़ाज़ में उसकी अयात में एक हर्फ़ की भी कमी व ज़्यादती नहीं है। बस जो अललाह की तरफ़ से रसूल पर नाज़िल हुआ और जो रसूल (स0)ने दुनिया तक पहुँचाया वो यही कुरआन है जिसकी हम तिलावत करते हैं। लेकिन सूरों कि तरतीब वो नहीं रही है जो नज़ूल की तरतीब थी सूरों में तरतीब बदल गयी है और उसकी दलील ये है कि ज़ाहिर है मक्के में रसूल (स0) तेरह बरस पहले रहे मदीने में बाद में रहे हैं मक्की सूरों को पहले होना चाहिए मदनी सूरों को बाद में होना चाहिये। लेकिन मौजूदा तरतीब आप देख लें कि मक्की सूरे बाद में हैं मदनी सूरे पहले हैं। तो खुद मदनी सूरों का पहले होना और मक्की सूरों का बाद में होना ये इस बात कि दलील है कि सूरों कि तरतीब वो क़ायम नहीं रही कि जिस तरह से सूरे उतरे थे।

एतेराज़ किया जाता है कि अगर कुरआन एक है तो अपना कुरआन अली (अ0) ने अलग से पेश क्यों किया? और फ़िर जब लोगों ने नहीं माना तो वापस क्यों ले लिया? तो कुछ तो अलग था। तो अमीरल मोमनीन अली इब्ने अबीतालिब (अ0) का पेश करदा कुरआन उसी तरतीब के लेहाज़ से था। जिस तरतीब से सूरे नाज़िल हुए थे। (सलवात) और दुसरी बात ये थी जो कि रद करने का सबब बनी कि अमीरुल मोमनीन (अ0) ने आयात की तफ़सीर नज़ूली, यानी वो तफ़सीर जो रसूल (स0) ने बयान फ़रमायी थी वो तफ़सीर जो अमीरलमोमनीन (अ0) तक रसूल के ज़रिये और रसूल (अ0) तक जिबरील के ज़रिये पहुँची थी आयात के ज़ैल में वो तफ़सीर भी लिख दी थी और उसमें बहुत से पोल खुलते थे, लेहाज़ा उसको मंजूर नहीं किया गया वरना जहाँ तक कुरआन का ताल्लुक़ है वो पूरा कुरआन वही है जो रसूल (स0) पर नाज़िल हुआ और जिस को रसूल (स0) ने उम्मत तक पहुँचाया था।

बहरसूरत मैं अर्ज़ कर रहा था कि कुरआने मजीद की मौजूदा तरतीब के हिसाब से पहला सूरा सूरए हम्द। वरना तरतीबे नज़ूली के हिसाब से तो पहला सूरा सूर–ए–इक़रा है। सब से पहला सूरा जो जनाबे रेसालत मआब पर नाज़िल हुआ है वो है सूर–ए–इक़रा''इक़रा बिइस्मे रब्बेकल्लज़ी ख़लक़। ख़लक़ल इंसान मिन अलक़ इक़रा व रब्बेकल अकरम अल्लज़ी अलम बिलक़लम अल्लाह इन्साना मालम यालम। पहला सूरा सूरए इक़रा है। यहीं से इब्तेदा हुई है वही की। यहीं से ग़ारे हेरा में वही कि इब्तेदा हुई है। लेहाज़ा नज़ूल के ऐतेबार से तो पहला सूरा सूरए इक़रा है लेकिन मौजूदा तरतीब के लेहाज़ से जो पहला सूरा है कुरआन मजीद में सूरए हम्द। उसी की मैं तिलावत कर रहा हूँ और उसी के सिलसिले में आपकी ख़िदमात में मतालिब अर्ज़ कर रहा हूँ। इससे पहले भी अर्ज़ किया। चार पाँच साल पहले भी मैंने सूरए हम्द को उन्वाने बयान क़रार दिया था। मगर उस दफ़ा मेरा ये बयान तशना रह गया था महदूद रह गया था मैंने सोचा कि इसी

सूरे की इब्तेदा करके बयान करूँ। मगर आप जानते हैं कि अभी तो मैं अलहम्दोलिल्लाह तक ही पहुँचा हूँ।

इरशाद हो रहा है बिस्मिल्लाहिर्रहमा र्निरहीम। उस अल्लाह के नाम से जो रहमान भी है और रहीम भी है। यही पहली आयत है कुरआन की और हर सूरे की सिवाऐ एक सूरे के हर सूरे की पहली आयत क्या है? बिस्मिल्लाहिर्रहमा र्निरहीम। अब उसके बाद जो पहली खुसूसी आयत है सूरए हम्द की वो है अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन। तमाम हम्द तमाम तारीफ़ तमाम सताईश तमाम मदह उस अल्लाह की है जो आलमों को पालने वाला हैं जो रब्बुल आलमीन है एक मरतबा ''बिस्मिल्लाहिर्रहमा र्निरहीम'' में रहमानीयत व रहीमियत इलाही का ऐलान किया फ़िर सूरए हम्द के ज़ैल में इरशाद होता है ''अर्रहमान अररहीम'' वो रब्बुल आलामीन वो आलमों का पालने वाला वो रहमान भी है हर शै पर रहम करता है उसके रहम का मुज़ाहेरा कायनात के ज़र्रे–ज़र्रे में मालूम कर सकते हो। उसका दामने रहमत आम है, रहमान है रहीम है, उसका फैज़ उसका इनआम उसकी तरफ़ से तफ़ज़्ज़ुले आम तो है ही लेकिन जो उसकी बारगाह में सर झुका दे जो उसकी रूबूबियत व उसकी उलूहियत के सामने सरे एताअत ख़म कर दे जब न मानने वालों के साथ भी रहम तो ज़ाहिर है कि मानने वालों के लिये तो रहमतें और झुक आती हैं। और ये रहमतें वो हैं जो क़ायम व दायम हैं। जो यहाँ भी है। बरज़ख़ में भी हैं। यौमे हिसाब में भी हैं, हिसाब व किताब के बाद भी जज़ा वा सज़ा के सिलसिले में ये रहमतें बाक़ी रहेंगी तो वो रहमतें मोमनीन के लिये जिनका सिलसिला यहां से शुरू हो कर वहाँ तक क़ायम रहता है उसकी तरफ़ इशारा है रहीम से। रहमान भी है उसकी रहमत बाक़ी रहने वाली भी है आम रहमत रहमान बाक़ी रहने वाली रहमत रहीम। मालिके यौमिद्दीन। वो रहमान व रहीम ही हक़ीक़ी मानों में यौमे जज़ा का मालिक है। वो मालिके यौमे जज़ा है। उस दिन मालूम होगा कि हक़ीक़ी मालिक कौन है। उस दिन पता चलेगा कि मालिकियत का दावा करने वाले किधर हैं।

तो मैं अर्ज़ कर रहा हूँ अलहम्दो लिल्लाह हर हम्द हर तारीफ़ हर सताईश अल्लाह के लिये है। जिसकी ज़बान पर जब भी जिस चीज़ की भी और जिस शख़्स की भी तारीफ़ आये वो हक़ीक़त में अल्लाह ही की है क्योंकि हर सनअत की तारीफ़ सानेअ की तारीफ़ होती है। हर असर की तारीफ़ मोअस्सर की तारीफ़ होती है। हर तख़लीक की तारीफ़ ख़ालिक की तारीफ़ होती है चूँकि पूरी कायनात सनअते इलाही है चूँकि पूरी कयनात आसार व रूबूबियत सेपूर है, चूँकि पूरी कायनात उसी की पैदा करदा है लेहाज़ा उस कायनात में जब भी जिस चीज़ की भी जो तारीफ़ करे हक़ीक़त में वो अल्लाह की तारीफ़ है (सलवात)

कल मैंने इस शुब्हे को दूर किया था कि कोई कहे जब सनअत पलट जाती है सानेअ की तरफ़। जब तख़लीक़ पलट जाती है ख़ालिक़ कि तरफ़ मैंने अच्छे शेर कहे हैं। आपने कहा क्या कहना सुभानअल्लाह मैं कोई ना मौज़ूँ शेर पढ़ गया आप मुसकुरा के मुझ ही को देख रहे हैं अरे जब पढ़ना नहीं आता तो पढ़ने की ज़रूरत ही क्या थी? जब कहना नहीं आता तो नाम शायरों में लिखवाने का आपको किस डॉक्टर ने लिख दिया था? हर एक मुझ ही पर ऐतेराज़ कर रहा है, क्यों साहब ग़लत शेर है मुझ से क्या मतलब? लेकिन चूँकि ग़लती आपकी है लेहाज़ा शेर की तरफ़ निस्बत नहीं आपकी तरफ़। तो इस बिना पर ये ऐतेराज़ पैदा होता है कि जब सब अल्लाह की तख़लीक़ है तो यहाँ की अच्छाइयाँ अगर अल्लाह की अच्छाइयाँ तो यहाँ कि बुराइयाँ भी मआज़अल्लाह अल्लाह की बुराइयाँ है। फिर उसी की मज़म्मत हो। मैं पूछता हूँ ये बुराइयाँ कहाँ है। क्या निज़ामे कायनात में कोई नक़्स है? क्या ये निज़ामे कायनात जो अल्लाह ने क़ायम

किया है उससे बेहतर कोई निज़ाम हो सकता था? तो यहाँ तो आकर बड़े से बड़े फ़लसफ़ी बड़े से बड़े ओलमा क़लम रख देंगें इससे बेहतर नज़्म क़ायम हो ही नहीं सकता था जिस तरह कायनात का नज़्म क़ायम किया गया। मैं पूछता हूँ यहां बुराई क्या? शायद कोई कहे कि सबसे बड़ी बुराई तो ये है कि अल्लाह मियाँ ने अगर भेजा था तो बुला क्यों लिया? भेजा ही न होता या बुलाया ही न होता। सब से बड़ी मुसीबत तो मौत ही होती है। उससे बढ़ के तो कोई मुसीबत नही। तो मैं कहता हूँ कि अगर ये मौत बुराई है तो क्या होना चाहिये था? आदम (अ0) से कितने अब तक आये सब रहते। ये ख़ाली आप ही थोड़ी। फ़िर जितने आादम से अब तक आये हैं सब ही रहते। आते और चले जाते हैं जब तो फ़रयाद हो रही है कि आबादी बढ़ रही है और अगर जितने आये हैं वो सब गये ही न होते, सब अब तक डटे हुऐ होते तो आप बताइये इस ज़मीन पर क़दम रखने की जगह भी होती? बस इसी इमाम बाड़े की मजलिस की तरह ठुसे हुऐ बैठे हैं सब। तो क्या वाकई ये ज़िन्दगी होती? क्या वाक़ेअन ये इंसान के लिये राहत व आराम की बुनयाद होती? कुदरत ने कहा आओ जो अपने नफ़्स में कमालात पैदा कर सकते हो करो। जो यहाँ से हासिल कर सकते हो करो। और वो हासिल करके अब मेरी बारगाह में आ जाओ। अब तुम्हारे लिये वो अज़ीम कायनात रखी है कि जहां कमी कि गुंजाइश ही न होगी, जहाँ वुसअत ही वुसअत है। अरे सब कुछ तो पैदा किया मगर ये सांप को क्यों पैदा कर दिया? ज़हरीला जानवर जिसके काट लिया जनाब वो तड़प रहा है, क्या ज़रूरत थी? न पैदा करता साँप। मगर आप जानते हैं कि साँप जिस ज़मीन में जिस जगह रहता है ये उसमें सम्मीयत और ज़हर खुद उसकी नहीं है बल्कि वो ज़मीन के मसमूम अजज़ा को अपने जिस्म में ज़्ज्ब कर लेता है। खुद बन जाता है ज़हरीला मगर ज़मीन को ज़हर से पाक कर देता हैतो इसको पैदा किया किसी मसलाहेत से। आप कहें ये नजिस जानवर फुज़लाख़ोर गन्दे उनकी तख़लीक़ की क्या ज़रूरत थी? तो मैं अर्ज़ करूँगा कि आपके यहाँ लखनऊ में ये मोहक्मऐ सफ़ाई की क्या ज़रूरत कि जो गंदगियों को साफ़ करते रहें जो उठा कर ले जाते रहें? इसीलिये तो कि गंदगियां फ़ैलें नहीं, इसीलिये तो कि गन्दगी से बीमारी पैदा न हो? कुदरत ने ऐसे जानवर पैदा कर दिये जिनकी गेज़ा ही गन्दगी क़रार देदी ताकि उसके ज़रीऐ मोहकमऐ सफाई कुदरत का काम करता रहे, और गंदगियाँ ख़त्म होती रहें। (सलवात)

तो मैं कहाँ तक पढ़ूँ। बहरसूरत इसमें कोई ऐख़तेलाफ़ नहीं कि जो निज़ाम कुदरत ने क़ायम कर दिया उससे बेहतर कोई नेज़ाम हो ही नहीं सकता था। तो अब ऐतेराज़ उसकी तख़लीक़पर तो हो नहीं सकता। बुराईयाँ जो हैं वो मैंने की हैं चोरी मैं करता हूँ, झूठ मैं बोलता हूँ, जुल्म मैं करता हूँ, तो अब पहले जो मैं पहले बयान कर चुका तो इस बिना पर मेरी बुराइयाँ भी चूँकि अल्लाह ने मुझे पैदा किया है वही ज़बान जो अल्लाह ने दी हे उसी से झूठ बोला, वही हाथ जो अल्लाह ने दिये उसी से जुल्म किया, तो अब इन बुराइयों की निस्बत भी अल्लाह की तरफ़ जाना चाहिये। तो इसको मैंने कल अर्ज़ किया कि अस्ल में तख़लीक़ में मक़सद देखा जाता है। छुरी बनायी थी इसलिये कि आप उससे अपनी ज़रूरतें पूरी करें और मैं छुरी ले जाकर किसी की पीठ में उतार दूँ तो छुरी बनाने वाला नहीं पकड़ा जायेगा। बंदूक इसलिये आपको दी गयी थी कि हिफ़ज़त करें, आप किसी के गोली मार दें तो बंदूक़ बेचने वाला नहीं पकड़ा जायेगा। इसलिये कि इस्तेमाल ग़लत आपने किया है। मुजरिम वो होगा जो ग़लत इस्तेमाल करे। अगर अल्लाह ने आज़ा व जवारेह ग़लत इस्तेमाल के लिये दिये होते तो अल्लाह पर इल्ज़ाम आता जब उसने ये आज़ा व जावारेह इसलिये दिये कि अगर ये न हों तो तुम्हारी ज़िन्दगी नाक़िस रह जायेगी। आंखों के बग़ैर हर

तरफ़ ठोकरें खाते न फ़िरते? क्या कुवते समाअत न होती तो उलूम में तरक़्क़ी होती जो आज हुई है? अगर पैर न होते तो लोथड़ा बने एक जगह बैठे न रहते? हाथ न होते तो ग़ेज़ा को दहन तक पहोंचा सकते थे? मालूम होता है कि जितने आज़ा दिये उसमें कोई न कोई मसलेहत रखी ग़लत इस्तेमाल मैं किया तो तारीफ़ देने वाले की होगी मज़म्मत ग़लत इस्तेमाल करने वाले की होगी। (सलवात)

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन हर हम्द हर सताईश हर तारीफ़ उस अल्लाह के लिये जो आलमीन का रब है। अलहम्द हर हम्द अब मैं यहां पर एक बात और अर्ज़ करना चाहता हूँ तवज्जो फरमायें अलहम्द हर हम्द किसी की ज़बान पर किसी की भी हम्द आये तो वो अल्लाह की हम्द तो अब अल्लाह की हम्द कैसी? किसी और की हम्द आ सकती हे अल्लाह के मुक़ाबले पर। अरे जो चुप हैं वो भी तारीफ़ कर रहे हैं जो वजूद में कमाल पाया जाता है वो भी तो उसी की तरफ़ पलटता है। तो हर तारीफ़ उसकी तो सब से बड़ी तारीफ़ अल्लाह के लिये। ज़रा तवज्जो फ़रमायें, तो अल्लाह का नाम क्या होना चाहिये था? वही जिसके लिये बहुत तारीफ़ें हैं मगर यहां पर मेरी समझ में नहीं आया कि अल्लाह ने अपना नाम रखा महदूद। महदूद कौन? जिसकी तारीफ़ की जाये और अपने हबीब का नाम रखा मोहम्मद। मोहम्मद कौन? जिसकी बहुत तारीफ़ की जाये। अरे मेरे मालिक तेरा नाम होना चाहये था मोहम्मद और तेरे हबीब का नाम होना चाहिये था महमूद। मगर यहाँ मुआमला उलटा हुआ। अपना नाम रखता है महमूद अपने हबीब का नाम रखता है मोहम्मद (स0)। शायद आप कहें कि उसने कहाँ रखा वो तो जनाबे अबदुल मुत्तालिब ने रखा था? ये अल्लाह ने कहाँ से रख दिया? मैं कहूँगा मेरा अक़ीदा हे कि अल्लाह ने नाम रखा इल्हाम के ज़रीऐ से। इल्हाम न कहियेगा, कि सिर्फ़ नबी और मासूम को होता है। अगर आम मूसा को वही हो सकती थी जो नबी नहीं हैं जो रसूल नहीं हैं तो अबदुल मुत्तालिब को भी इल्हाम हो सकता है कि मेरे नबी का नाम मोहम्मद (स0) रखो। क्यों? दलील क्या है? हर मां बाप की तमन्ना होती है कि अपने बच्चे का अच्छा सा नाम रखें। खुद समझ में नहीं आता जनाब से रखवायेंगें। वो कुरान से निकाल दें बहोत अच्छा नाम हो। किसी शायर से नाम रखवायेंगें अरे वो ढूँड के बता दे कि कौन नाम अच्छा है? तो माँ बाप के दिल की तमन्ना होती है कि उसकी औलाद का नाम बेहतरीन रखा जाये। मैं तमाम दुनयाऐ अरब से कहता हूँ कि लोग़त में ढूँड कर बताओ मोहम्मद से बेहतर कोई नाम हो सकता है। लफ़्ज़ के ऐतेबार से मआनी के ऐतेबार से। सुनने में भला लगने के ऐतेबार से मोहम्मद से बेहतर कोई नाम हो सकता है।

यारब बिन कुतहान जिससे इब्तेदाए अरबियत है उस वक़्त से लेकर जनाबे रेसालत मआब (स0) की विलादत तक हज़ारों बरस गुज़रे और उन हज़ारों बरस में लाखों बच्चे पैदा हुऐ और हर मां बाप की तमन्ना कि बेहतर नाम हो ज़रा सोचें और ग़ौर करें कि अबू जहल मिल गया नाम अबूलहब मिल गया नाम अबू सुफ़यान मिल गया नाम और किसी कि नज़र न गयी मोहम्मद (स0) पर। उससे बेहतर कोई नाम नहीं हो सकता है न लफ़्ज़ के ऐतेबार से न मआनी के ऐतेबार से न तलफ़्ज़ुज़ के ऐतेबार से ये खुद बताता है कि कोई उस नाम के गिर्द मोहासेरा किये हुऐ था कि जब तक हक़दार आ न जाये दूसरा इस्तेमाल न करे। मेरे हबीब का नाम हो जाये तो दुनिया रखे। फ़िर लाखों उस नाम के मिलेंगें मगर ये नाम जिसके लिये छिपा रखा है जब तक वो आ न जाये उस वक़्त तक किसी की नज़र जाने न पाये अब सवाल होता है मालिक अपना नाम तुने महमूद क्यों क़रार दिया? हबीब का नाम मोहम्मद क्यों रखा? तेरी हम्द के मुक़ाबिल में रसूल की तारीफ़ ज़ाहिर है। बंदे हैं। लाख बलन्द सही मगर बंदे तो हैं। उनकी

तारीफ़ क्या है "बाद अज़ खुदा बुज़ुर्ग तुही" अल्लाह के बाद सबसे बड़े। मगर ज़ाहिर है अल्लाह आज़म व अकबर है। तो तेरा नाम होता मोहम्मद तेरे बन्दे का नाम होता महमूद मगर ये नाम उलट क्यों गया। अब उसके लिये मैं वही मिसाल जो इससे पहले पेश कर चुका हूँ तारीफ़ के सिलसिले में। जब मैंने कहा था कि सनअत की तारीफ़ सानेअ कि तारीफ़ होती है। उसी मिसाल को पेश करता हूँ कि एक मुशायरे में एक मक़ासदे में आप तशरीफ़ ले गये और शायर साहब कसीदे या अपनी ग़ज़लें या नज़्म पढ़ रहे है। और हर हर शेर की दाद मिल रही है हर हर शेर पर लोग तारीफ़ें कर रहे हैं। मजमा खड़ा हुआ जाता है, और जब दाद मिलती है तो वो आदाब इज़्ज़त अफ़ज़ाई, शुक्रिया बस ख़त्म एक सलाम पर हर तारीफ़ को टाल रहे हैं। कि एक गोशे में नज़र पड़ी तो एक बुज़ुर्ग बैठे हुऐ थे, बूढ़े आदमी बुज़ुर्ग उन्होंने कहा बेटा ये मिसरा अच्छा हो गया। न वाह वाह है न सुबहान अल्लाह है न खड़े हुऐ न और कुछ। मिसरा अच्छा हो गया, बस उन्होंने इतना कहा और वो मुड़ गये अब झुक झुक के तस्लीमें कर रहे हैं हजूर ही के क़दमों का फ़ैज़ है। हजूर ही का तुफ़ैल है, मैं किस क़ाबिल हूँ? सरकार ही ने तो मुझे इज़्ज़त दी है यह फर्क़ क्या हो गया। इससे पहले मजमा, आम लोग कर रहे थे मदह और अब उस्तादे फ़न ने की है जैसा मद्ह करने वाला होता है वैसी ही तारीफ़ की अहमीयत पैदा होती है। अरे अल्लाह की हम्द पूरी कायनात ने की मगर यह मख़लूक़ की हम्द थी ख़ालिक के लिये। और महबूब की हम्द खुद हबी ब ने कर दी जब अल्लाह मद्ह कर दे अपने प्यारे पैग़मबर की तो मख़लूक़ की मद्ह दब जायेगी, ख़ालिक़ की मद्ह बलन्द हो जायेगी। दुनिया जिसकी मद्ह करे वो महमूद होगा अल्लाह जिसकी मदह करे वो मुहम्मद (स0) होगा।

मेरी समझ में नहीं आता क्या ज़हन है? यानी दूसरे फिरक़े वाले तो अपने रहनुमाओं को इतना ऊंचा किये दे रहे हैं कि इंसान स आदमी से बलन्द वो साहब अललाह के उक़ाब थे। और न मालूम क्या थे ये थे वो थे और अल्लाह के बेटे थे फ़लां थे। और हमारे वहाँ क्या है जो फ़ज़लीत है वो भी ग़ायब। अरे साहब वो तो हमारे ही ऐसे थे बस। मेरी समझ में नहीं आया कि अरे ये रसूल (स0) की अज़मत क्यों खल रही है लोंगों को हम कहते हैं हमारे ऐसे और अल्लाह कहता है कि ये तो हमारे नबी आम अंबिया का ऐसा भी नहीं। हर नबी को आवाज़ दी जा रहीं है नाम लेकर। नाम पुकारा जा रहा है लेकिन जब मंज़िल आती है ख़ातेमुन नबीईन की तो अब यहाँ नाम नहीं लिया जाता बल्कि कभी नबी कह कर पुकारा जाता है कभी रसूल कह कर पुकारा जाता है कभी बशीर कहा जाता हे कभी उसको मुज़म्मिल कहा जाता है कभी मुदस्सिर कहा जाता है कभी यासीन कहा जाता है पूरे कुरआन में अल्लाह ने कहीं नाम लेकर पुकारा ही नहीं। तुम्हें हुक्म दिया है कि मेरे नबी को नाम लेकर न पुकारना ओहदे के साथ पुकारना तुम से बाद में अमल करने को कहा कुदरत ने खुद अमल करके पहले दिखा दिया। (सलवात)

ज़रा तवज्जो फरमायें क़रीब है सुल्तानुल मदारिस एक ज़माने में मैं यहां पढ़ाया करता था और आप हज़रात को मालूम है कि सामने ही वो अस्पताल है ज़नाना अस्पताल जिसको मिशन वाले पहले चलाते थे, तो एक मिशनरी साहब पादरी साहब होंगें बहर सूरत वो अक्सर मेरे पास आया जया करते थे ख़ाली वक़्त में। न मालूम क्या दिलचस्पी हो गयी थी बाअज़ वक़्त इधर उध ार की बातें वो करते रहते थे। एक दिन उन्होंने सवाल किया वो मैं आपके सामने पेश करता हूँ। वो सवाल करते हैं कि आप लोग मुसलमान कहते हैं कि आपके रसूल तमाम अंबिया से अफ़ज़ल। सय्यदुल मुरसलीन हैं ख़ातेमुन्नबीयीन हैं। सबसे अफ़ज़ल। लेकिन लक़ब जो आप लोग रसूल का कहते हैं वो कहीं कुरआन भर में मौजूद नहीं आप कहते हैं रसूल का लक़ब है हबीबुल्लाह

। अल्लाह के महबूब अल्लाह के प्यारे जो लक़ब मुसलमान कहते है। ख़ुद अपने नबी का वो क़ुरआन में नहीं मिलता। गुज़िशता अंबिया के सब के अलक़ाब का ज़िक्र है। जनाबे इब्राहीम को ख़लील बनाया। जनाबे मूसा कलीम हैं "कल्लमल्लाहो मूसा तकलीमा" हर नबी के लक़ब का ज़िक्र और रसूल (स0) का लक़ब है हबीबुल्लाह और कहीं ज़िक्र नहीं, तो ये क्या है? रसूल ही के लक़ब का क़ुरआन में ज़िक्र नहीं। और वाक़ेअन जब देखा मैंने तो न हबीब की लफ़्ज़ आयी है न हबीब से जो मुशतक़ है लफ़्ज़ आयी है। मगर जो उस वक़्त मेरे ज़हन में जवाब आया वो अर्ज़ करता हूँ। और ये मेरा जवाब नहीं है कुदरत का वादा है कि अगर कोई मेरी मदद करेगा तो मैं उसकी मदद करूँगा। तो बहर सूरत मैंने कहा कि जी हाँ ठीक कहा आपने रसूल के लिये ये लक़ब कहीं इस्तेमाल नहीं हुआ लेकिन अगर ये इस्तेमाल हो जाता तो फ़िर रसूल में और गुज़िशता अंबिया में फ़र्क न रहता। सतह एक हो जाती किसी को ख़लील कहा, किसी को कलीम कहा, किसी को सफ़ी कहा, किसी को हबीब कह दिया और कुदरत इमतेयाज़ क़ायम रखना चाहती थी इब्राहीम ख़लील हैं लेकिन क्या कहें क़ुरआन बताता है कि जो नक़्शे क़दमे इब्राहीम पर चले वो भी ख़लील बन जाये मूसा कलीम हैं लेकिन क्या कोई सनद है कि जो जनाबे मूसा को सही मानों में मान ले वो भी कलीम बन जायेगा? ये लक़ब अंबिया के हैं लेकिन रसूल (स0) के लिये क्या इरशाद हुआ रेसालत मआब के लिये इरशाद होता है "कुल इनकुनतुम तोहिब्बूनल्लाह फ़त्तबेउनी" कि अल्लाह को दोस्त रखो और मेरे नक़्शे क़दम पर चलो "योहबिब्कूमुल्लाह" अल्लाह भी तुम को दोस्त रखेगा। तो मालूम हुआ कि मरतबा इतना बलन्द किया गया कि वो ख़ुद है ख़लील वो ख़ुद है सफ़ी और बस लेकिन उनके नक़्शे क़दम मर चलने वाला भी हबीबे ख़ुदा बन जाया करता है। अल्लाह का महबूब बन जाता है। (सलवात)

तो उसका नाम महमूद और ये मोहम्मद (स0) अलहम्द वो सूरा है कि जिसकी तिलावत हर नमाज़ में वाजिब। पहला जुमला अलहम्दो लिल्लाह और उसी से मुशतक़ करके नबी का नाम रखा मोहम्मद (स0) और सबसे ज़्यादा जिस सिफ़त का क़ुरआन ने तज़केरा किया मैं अर्ज़ कर चुका कि हर मुसलमान कम से कम तीस मरतबा उसका ऐक़रार करे। यानी "अर्रहमा निर्रहीम" वो रहमान भी है और रहीम भी है। ये वो सिफ़त जिसकी तीस दफ़ा तकरार कम से कम। हर मुसलमान पर लाज़िम, मैं हुँ रहमानो रहीम तो नबी का लक़ब अब क्या क़रार दिया जाता है "रहमतुललिलआलमीन"। रहमत मसदर जिस में रहमान भी शामिल जिस में रहीम भी शामिल। नाम मोहम्मद (स0) अलहम्द से। लक़ब रहमत उस का नबी जो रहमान व रहीम।

मैं अब एक बात अर्ज़ करना चाहता हूँ अगर एक नाम होता जो उससे पहले कभी नहीं रखा गया तो मैं कहता इत्तेफ़ाक़ से अरब वालों की नज़र चूक गयी। किसी की नज़र ही न पड़ी कि कोई अपना नाम मुहम्मद रख देता। लेकिन कुदरत का अजीब ऐहतेमाम मेरी नज़र ने जब तलाश किया तो न मोहम्मद (स0) से पहले कोई मोहम्मद मिला न अली (अ0) से पहले कोई अली (अ0), मिला, न हसन से पहले कोई हसन मिला, न हुसैन से पहले कोई हुसैन मिला। मालूम होता है कुदरत इन नामों की हिफ़ाज़त कर रही है कि भला तुम उन ज़ातों तक कब पहुँच सकोगे जब नामों तक न पहुँच सके (सलवात)। और क्यों न हो ये वो हैं जो रसूल से जुदा नहीं यह वो हैं जो रसूल से अलग नहीं। किसी के लिये नस क़ुरआन की ये नफ़्से मुहम्मद हैं। हदीस व रिवायात और चीज़ है क़ुरआन की नस और चीज़ है। नस क़ुरआन कि नफ़्से मुहम्मद (स0)। मैदाने मुबाहेला में आ रहे हैं और आयए मुबाहेला ताआलू नदऊ अनद अबना अना व अबनाअकुम व अनफ़ोसना व अनफ़ोसकुम। आ जाओ हम अपने बेटों को लायें तुम अपने बेटों को लाओ हम अपनी औरतों को

लायें तुम अपनी औरतों को लाओ। हम अपने नफ़्सो को लायें और तुम अपने नफ़्सों को लाओ। और आप बताइये कि अली (अ0) नफ़्स का मिसदाक़ नहीं हैं तो और कौन है? उससे पहले दो लफ़्ज़ें हैं अबना अना। अबनाअना। में अली (अ0) आते नहीं रसूल के बेटे हैं नहीं। नेसाअना। नेसा का मक़सद हैं फ़ातेमा (अ0) तो अब अली (अ0) को लाये क्यों रसूल (स0) जब इजाज़त न थी। तो बस एक ही लफ़्ज़ तो रह गयी अनफ़ोसना। तो मालूम हुआ कि कुरआन ने बताया कि मिस्दाक़े नफ़्स कौन।

और ऐहतियाते रेसालत इतनी कि देखो तरतीब भी बदलने न पाये। कहीं उलझ न जाना मतलब समझने में। अगर अबना अना कि लफ़्ज़ आगे होगी तो ये बच्चे आगे–आगे। अगर लफ़्ज़े नेसा अना बीच में होगी तो लफ़्ज़े नेसा कि मिसदाक फ़ातेमा (अ0) वस्त में होंगीं। और अनफ़ोसना बाद में होगी तो मिस्दाक़े अनफ़ोसना अली (अ0) सब से पीछे होंगें। एक सतर कुरआने सामित में मिलेगी एक सतर कुरआने नातिक़ में मिलेगी वहाँ लफ़्ज़ें देखते जाना यहाँ मतलब देखते जाना (सलवात)

और ज़रा तवज्जो फ़रामाएं एक और आयत अर्ज़ कर रहा हूँ। मैं कहता हूँ कि अगर अली को नफ़्स न क़रार दो तो अली (अ0) से ज़्यादा ज़ाते नबी (स0)पर ऐतेराज़ हो जायेगा। कुरआने मजीद में हुक्म दिया जा रहा है रसूल (स0) से ''जाहद अलकफ़रो अलमुनाफ़ेक़ीन''। ऐ मेरे नबी कुफ़्फ़ार से भी जेहाद किजिये और मुनाफ़क़ीन से भी जेहाद किजिऐ। दिखाइये कि नबी ने जेहाद किया हो कुफ़्फ़ार से ख़ैर कुफ़्फ़ार से जेहाद कर भी लिया तो मुनाफ़ेक़ीन से कौन सा जेहाद होता है ओलमा ने जवाब दिया तो वो भी नक़्ल करूँ कि एक जेहाद होता है लशकर का और एक जेहाद होता है सरदारे लशकर का। लशकर का जेहाद है मैदाने जंग में आकर जंग करना सरदारे लशकर का जेहाद है लशकर को तरतीब देना। लशकर की तन्ज़ीम करना। लशकर को भेजना। रसूल (स0) ने जो सरदारे लशकर का जेहाद था वो जेहाद किया तो मुनाफ़ेक़ीन कहां गये? कहा जेहाद दो तरह का होता है, एक अमली और एक सैफ़ी। तलवार से जेहाद और क़ौली जेहाद। रसूल (स0) ने मुनाफ़ेक़ीन के ख़िलाफ़ क़ौली जेहाद किया। चलिये ये भी सही।

अब इसके बाद मैं आपकी ख़िदमत में एक आयत अर्ज़ करता हूँ। मुसलमान जवाब दें, कुरआन पुकार रहा है ऐ मेरे नबी ख़ुदा की राह में क़ेताल करो। अब ये ज़बान नहीं रही, अब ये क़लम नहीं रहा, अब ये माल से जेहाद नहीं रहा, क़ातल'' क़ेताल करो, जंग करो, फ़ी सबीलिल्लाह ख़ुदा की राह में क़त्ल करो।

अब मुमकिन है उसका मतलब ये हो कि लशकर भेजो तो इरशाद हुआ ''ला तकल्लेफ़ुनन्ह अनफ़सेका'' इस क़ेताल की तकलीफ़ आपकी शख़्सी और ज़ाती है लशकर का हुक्म नहीं है। ये तनहा आपकी ज़ात को हुक्म दिया जा रहा है, क़ातिल। क़ेताल करो ख़ुदा की राह में और मोमनीन के लिये कहा हिरज़ लमोमनीन मोमनीन को भी जेहाद के लिये आमादा किजिये। लीजिये मोमनीन का हुक्म अलग नबी की ज़ात का हुक्म अलग। अब मै। मुसलमानों से पूछता हूँ कि दिखाइये नबी ने कब क़ेताल किया? कब क़ेताल फ़ी सबीलिल्लाह पर अमल किया। मैं जानता हूँ, मुझ पर ऐतेराज़ न कीजिये, वो तलवार उछाल देना और किसी की पीठ पर ज़रा सी ख़राश आ जाना और उसी ख़राश से उसका हाय मार डाला कह कर मरजाना क़त्ल नहीं कहलाया जाता है। मोजिज़ा कहलाता है। नबी ने दिखाइये कब क़ेताल किया? बद्र का मैदान ख़ाली ओहद का मैदान ख़ाली ख़न्दक़ के मैदान में दूसरों से कह रहे हैं जाओ जाओ ख़ुद नहीं जाते। पूरी तारीख़ ख़ाली। ऐ नबी अल्लाह ने कहा आप जंग कीजिये और आप करते ही नहीं? तो मुझ से कहा ज़कात दीजिये मैं ज़कात नहीं देता आपने एक हुक्म पर अमल नहीं किया नबी होकर मैं तो

उम्मती हूँ सब छोड़े देता हूँ? तो मनाना पड़ेगा कि नबी (स0) ने क़ेताल किया तो अब तारीख कहाँ से लाऊँ? कोई नई तारीख़ लिखिये जो तारीख मेरे सामने हैं उसमे तो क़ेताल मिलता नहीं। और शायद कोई कहे कि तो भी तो कहता है मोहम्मद (स0) रसूल अल्लाह अरे ऐतेराज़ अपने रसूल(स0) पर भी तो कर रहा है मैं कहूँ जी नहीं मेरे रसूल (स0) पर ऐतेराज़ नहीं हो सकता और अगर आपको देखना है कि मेरे रसूल (स0) पर ऐतेराज़ क्यों नहीं होता तो फिर से आयत पढ़ लीजिये क़ालित फ़ी सबीलिल्लाह खुदा की राह में क़त्ल कीजिये ला तकल्लेफुल अनफ़सेका अरे इस जंग की तकलीफ़ आपके नफ़्स को दी जा रही है। तो अगर रसूल का नफ़्स मौजूद न होता। तो खुद मैदान में आते और जब नफ़्से रसूल (स0) मौजूद था तो हर मैदान में नफ़्स को भेज रहे थे अब फ़ातहे ख़ैबर नफ़्स है फ़ातहे ख़न्दक़ नफ़्स है (सलवात) तो अब जो नफ़्से रसूल (स0) है वो हर मैदान का फ़ातेह। जो नफ़्से रसूल (स0) है वही बद्र में है वही ओहद में है। हर मैदान का अलमदार वही है कि जो नफ़्से रसूल (स0)। गोया अमल भी अली (अ0) के हाथ से वाबस्ता होकर रह गया जब भी देखा मैंने इस्लाम का अमल अली (अ0) के हाथ में। और सिर्फ यहीं तक नहीं जब मैंने क़यामत में देखा रसूल (स0) ने फ़रमाया कि अहलाह क़यामत में मुझ को लवाउल हम्द देगा जिसके नीचे जिसके साये में मुसलमान जन्नत में जायेंगें मगर लवाउल हम्द मुझको देगा हामिल उसके अली (अ0) होंगें। तो मालूम हुआ ऐसा अलमदार जो नबी का यहाँ भी अलमदार जो नबी का वहाँ भी अलमदार। और अब मैं अर्ज़ करूँ कि बद्र की जंग भी बड़ी ही मारेकातुल आरा जंग थी, ओहद का मारेका भी बड़ा ही अज़ीमुश्शान मारेका था, और ख़ैबर की फ़तह भी बड़ी ज़बरदस्त फ़तह थी, लेकिन वो लड़ाई कि जिसने हमेशा के लिये हक़ को महफ़ूज़ कर दिया जिसने हमेशा के लिये बातिल कि नाक रगड़ दी जिसके बाद इस्लाम पर हमला नहीं होगा मुसलमानों से जंग हो सकती है। तो वो आख़री मारेके कुफ़्र और इस्लाम उसने लड़ा कि जिसके लिये रसूल ने कहा था कि हुसैनो मिन्नी व अनामिनल हुसैन अब ज़ाहिर है कि बेटे के दौर में करबला में तो बज़ाहिर अली (अ0) मौजूद नही। थे तो अलमदारी अलग हो जाती, तो अली (अ0) ने कहा नहीं इस मारके की अलमदारी भी मेरी ही ज़िम्मेदारी है। मैं अपनी जगह पर किसी को नायब बना कर भेज दूँ। कचहरी नहीं गया मुख़तार नामा लिख दिया मुख़तार ने मेरी तरफ़ से दस्तख़त किये, मेरी ही तरफ़ निस्बत। तो अली (अ0) ने चाहा कि इस मारके में भी अलमदारी इधर उधर जाने न पाए मैं अपना नायब खुद मोअय्यन करता जाऊँ। लेहाज़ा एक मरतबा अक़ील से कहते हैं कि ऐ अक़ील तुम अन्साबे अरब से वाक़िफ़ हो किसी शुजाअ घराने की बीवी को मुंतख़ब करो मैं अक़्द करना चाहता हूँ अक़ील ने पूछा क्यों मौला? ये शुअअ घराने की औरत की तलाश क्यों? कहा चाहता हूँ एक बहादर फरज़न्द पैदा हो जो करबला में मेरे हुसैन (अ0) के काम आये।

तो मालूम हुआ कि अलमदारी के लिये अपना नायब तलाश कर रहे हैं जो मेरी नयाबत करबला के मारके में करे। अब बतायें कि जब अली (अ0) का सा अलमदार चुन चुका है तो अब हुसैन (अ0) सिवाए अब्बास के किस को अलम दें? भय्या तुम ही हो मेरे अलमदार और यही वो रवायात है जिसको याद दिलाया है ज़ुहैरे क़ैन ने। एक मरतबा तलाया फिर रहे हैं अब्बास (अ0)। हिफ़ाज़त कर रहे हैं ख़ैमों की, ज़ुहैरे क़ैन क़रीब आये, मौला आपके बाबा की हदीस याद आगई। कहा बयान करो वक़्त तंग है, कहा यूँ नहीं ज़रा ख़ैमों के पीछे चलिये। ख़ैमों के पीछे लेकर आये वाक़ेआ बयान किया अक़ील को बुलाया अली (अ0) ने ये कहा और अली (अ0) ने आपकी मादरे गिरामी का इंतेक़ाब किया। अब इसके बाद जनाबे ज़ुहैरे क़ैन कहते हैं मौला! याद रखियेगा अली (अ0) आज ही के दिन के

लिये आपको ज़ख़ीरा कर गये हैं। बस ये सुनना था कि अब्बास (अ0) ने अंगड़ाई ली, फ़रस की रकाबें टूटीं, फ़रमाते हैं अतशजअनी या ज़ुहैर अरे मुझे शुजाअत दिला रहे हो! ऐसी जंग करूँगा जो क़यामत तक याद रहेगी। अरे हाँ यही वो शुजाअत का जज़्बा था कि हुसैन (अ0) ने सब को जंग की इजाज़त दी। बस एक अब्बास (अ0) को इजाज़ते जेहाद न मिली। जब आते हैं। कहते हैं आक़ा इजाज़त दिजिये। फ़रमाते हैं तुम तो लशकर के अलमदार हो कैसे मरने की इजाज़त दे दूं? तुम तो मेरे लशकर की ज़ीनत हो, अक़ील का तुम ही इंतेख़ाब हो। क्या बताऊँ मैं क्यों कहूं कि अक़ील का इंतेख़ाब था। मैं अर्ज़ कर चुका कि कभी–कभी उधर से इलहाम हुआ करता है ये अक़ील का इंतेख़ाब न था ये कुदरत चुन रही थी हुसैन (अ0) के लिये अलमदार को। ज़बान अक़ील की थी इरादा था कुदरतका ऐसी बीबी को चुना जहां ख़ानदान में सिर्फ शुजाअत ही न थी बल्कि वफ़ा का पैकर। बल्कि मोहब्बत की तस्वीर। अरे ऐसी बीबी कि जिसके लिये सुनता हूँ कि कभी मां न कहा हमेशा कनीज़ कहती रहीं। फातेमा (अ0) की कनीज़ और तमाम मक़ातिल में मौजूद है कि ये उम्मुलबनीन वो थीं जिन के चार बेटे थे वो भी अली (अ0) के सुल्ब से। इसी बिना पर उम्मुलबनीन कुन्नियत पड़ी और जब कोई उम्मुलबनीन कहता तो ग़मगीन हो जाती थीं कहती थीं अरे अब मुझे उम्मुलबनीन न कहो। मेरे चार बेटे थे मगर वो चारों शेर करबला के बन में हुसैन (अ0) पर निसार होकर आराम कर रहे हैं। आया करती थीं बक़ीअ में वो सबकी क़ब्रों केनिशान बनाती थीं। ये अब्बास की कब्र। ये जाफ़र की क़ब्र। ये औन की कब्र । और कब्रों के निशान बनाती जाती थीं और उसके बाद कहती थीं, क्या मैं अब्बास के लिये रोऊँ? क्या मै। औन के लिये रोऊँ? क्या मैं जाफ़र के लिये रोऊँ? फ़िर कहती थीं नहीं मैं नहीं रोऊँगीं इस लिये कि दुनिया कहेगी कि मां मौजूद थी रो रही है। अरे मै। उस बच्चे पर रोऊँगी जिस बच्चे की मां न थी। उसके बाद फ़रमाती थीं। वा हुसैना। व अहसैना बड़ी वफ़ादार बीबी थीं। इसी जां निसार बीबी का दूध पिये हुऐ अब्बास।

और अब्बास (अ0) की वफ़ादारी अब्बास (अ0) की जां नेसारी। नाज़ है हुसैन (अ0) को अब्बास (अ0) पर और अकेले हुसैन (अ0) को नहीं, अरे अब्बास (अ0) पर भरोसा ज़ैनब (अ0) को भी है। अब्बास (अ0) पर भरोसा उम्मे कुलसूम (अ0) को भी है। अब्बास (अ0) पर भरोसा भतीजी को भी है। हुसैन (अ0) समझते हैं मेरे लशकर की ज़ीनत। ज़ैनब (अ0) समझती हैं जब तक अब्बास (अ0) ज़िन्दा हैं मेरे बाज़ूओं में रसन नहीं बंध सकती मेरे सर से चादर नहीं छिन सकती। और उम्मेकुलसूम (अ0) से फ़रमाते है। ऐक बहन अगर औलाद नहीं तो गुलाम है और सकीना (अ0) को क्या नाज़! अरे मेरा चचा ज़िन्दा है, तो मैं प्यासी तो न रहूँगी।

आते हैं कहते हैं मौला! मरने की इजाज़त दीजिये। हुसैन (अ0) इजाज़त नहीं देते हैं लशकर की ज़ीनत हो, लशकर के अलमदार हो। यहां तक की अब आख़िर में कहा। कहा आक़ा अब तो मरने की इजाज़त दे दीजिये कहा भय्या तुम लशकर के अलमदार कहा वो लशकर कहाँ रहा जिसका मैं अलमदार था? जहाँ लशकर है वहाँ अलमदारी भी कर लूंगा। हुसैन (अ0 ने सर झुकाया अब्बास (अ0) चाहते थे कि जायें। एक मरतबा कहा भय्या जा रहे हो तो मेरे प्यासे बच्चों के लिये पानी का इंतेज़ाम करते जाओ आये मैदान में और आवाज़ दी कि ऐ लशकरे जफ़ा कार! अरे नजिस जानवर तक पानी पियें और हुसैन (अ0) के बच्चे प्यास से तड़प रहे हैं एक जामे आब मिलेगा पानी में कमी न होगी जवाब मिला कह दो हुसैन से कि दुनिया पानी–पानी हो जाये हुसैन (अ0) को एक क़तरा आब न मिलेगा।

अब्बास (अ0) सा शुजाअ ये जवाब सुन कर पलटा। आया सर झुका कर कहा आक़ा इजाज़त तो दे दिजिये कि बच्चों के लिये पानी ले आऊँ। हुसैन (अ0) ने सर झुकाया। अब्बास

(अ0) ख़ैमे में आये। मशक उठाई ख़ैमे से चले थे कि सकीना ने दामन पकड़ा ऐ चचा जो गया वो फ़िर पलटा नहीं। ऐ चचा कहां छोड़ कर चले? अब्बास (अ0) सर झुकाये खड़े हैं सकीना (अ0) दामन पकड़े हुऐ हैं। आपने सुना होगा ज़ाकेरीन से कि जब सकीना (अ0) ने दामन पकड़ा था तो अब्बास (अ0) ने अपनी तलवार दे दी थी ऐ बेटी मैं लड़ने नहीं जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिये पानी लेने जा रहा हूँ। हां–हां मैंने मक़ातिल में लफ़्ज़ें नहीं देखीं लेकिन इतना ज़रूर देखा है कि अब्बास जब निकले तो हाथ में तलवार न थी ख़ाली नैज़ा था। मालूम होता है तलवार सकीना के सिर्पुद कर आये थे। निकले मैदान में आये। दरिया का रूख़ किया। चार पाँच हज़ार सिपाही रास्ता रोके हुऐ। मगर अली के शेर को भी कोई रोक सकता है? हमला किया हमले के बाद हमला लशकर भागा अब्बास (अ0) दरिया तक पहुँचे। दरिया में घोड़ा डाला प्यासे बच्चों ने तीन दिन के बाद लहरें लेता हुआा दरियाा देखा। दरया में अब्बास (अ0) के घोड़े को देखा दरिया में डाली हुई ख़ाली मशक को देखा। अब जब कोई बच्चा कहता था हाये प्यास तो सकीना (अ0) कहती थीं अब क्यों रो रहे हो? अब मेरा चचा पानी ला रहा है। मेरा चचा पानी ला रहा है। मशक में पानी भर गया है बस अब पानी आता होगा। अब्बास (अ0) निकले घोड़े को निकाला ख़ैमों का रूख किया भागी हुई फ़ौजे पलटी। फ़िर रास्ता रोका। अब्बास (अ0) जंग भी करते जा रहे हैं। मशक को बचाते भी जा रहे हैं। आज आपको अब्बास (अ0) का मातम करना है इसलिये मैं ख़त्म अभी नहीं कर रहा हूँ इसलिये कि अलमदार का मातम है। अरे उस मां के बच्चे का मातम है। जो अपने बच्चे पर रोई नहीं जो हुसैन (अ0) का मातम कर रही थी एक मर्तबा तलवार पड़ी अब्बास का दाहेना हाथ कटा। आगे बढ़े तो बांयां हाथ कटा। मेरी समझ में नहीं आया कि अली (अ0) से जिस ने जंग सीखी हो वो जंग में इतना ग़फ़िल कैसे हो गया कि दुशमन को मौक़ा मिल गया धोखा देकर वार करके हाथ काटने का। मगर मेरा दिल कहता है कि जब अब्बास (अ0) चले तो हाथों पर कोई ज़ख़्म आ गया। उस वक़्त चले थे तो एक इरादा था कि फ़ौजों को भगा के दरिया तक पहुँच जायें फ़ौजों को भगा भी दिया। दरिया पर क़ब्ज़ा भी कर लिया। मगर अब अब्बास (अ0) की नीयत अब्बास (अ0) की तवज्जो पूरी मशक की तरफ़ है। जब तवज्जो हट जाती है मौक़ा मिल जाता है दुशमन को। अब अब्बास (अ0) अपनी फ़िक्र में नहीं अब तो मशक की फ़िक्र में हैं। दुशमन को मौक़ा मिला। हाथ कटा दूसरा वार किया। दूसरा हाथ कटा। अब्बास (अ0) ने मशक को दांतों से दबाया। घोड़े को ऐड़ पर ऐड़। अरे किसी तरह प्यासों तक पानी पहोंच जाये। हमीद कहता है कि थोड़ी दूर पहोंचे थे घोड़े के ऊपर बलन्द होते थे ख़ैमों को देखते थे कि प्यासे बच्चे कितनी दूर रह गये। अब सकीना (अ0) तक पानी पहोंचने में कितना फ़ास्ला रह गया कि एक मरतबा एक तीर आकर मशक पर पड़ा। मशक छिदा पानी बहा। शकी ने गुर्ज़ मारा सर ज़ख़्मी हुआ और आवाज़ दी ऐ भय्या! अब्बास कि मदद किजिये। हुसैन चले ये कहते हुऐ अलान इन कसर ज़हरी अब्बास तुम्हारे मरने से कमर टूट गयी।

(बक़िया पेज नं0 22 का,............)

बगोशाने इस्लाम के अन्दर क्यों मफकूद हो गई।? हर शख़्स को इख़्तयार है कि वह हालात पर तनकीदी निगाह डाले और तवारीख़ इस्लाम से इस सवाल के जवाब का मुतालेबा करे लेकिन मुझे सिर्फ यही कहना है कि किताब शहादत की तदवीन एख़्लाक इस्लामी के इन्हीं भूले हुये अस्बाब को याद दिलाने के लिये की गई। जिस का इफ़्तेताहिया कूफ़े में मुस्लिम (अ0) बिन अक़ील थे और ततिम्मा क़रबला में हुसैन इब्ने अली (अ0)।